अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महात्मा महाश्रमण के ज्योतिचरण से पावन हुआ कोल्लम

-तेज धूप से तप्त धरती पर आचार्यश्री ने किया लगभग तेरह किलोमीटर का विहार

-कोल्लम स्थित रमा वर्मा क्लब परिसर में आचार्यश्री का हुआ पदार्पण

-अच्छा त्याग आत्मा के उत्थान में सहायक: आचार्यश्री महाश्रमण

13.03.2019 कोल्लम (केरल): केरल की धरती पर गतिमान अहिंसा यात्रा धीरे-धीरे केरल की राजधानी तिरुअनंतपुरम (त्रिवेन्द्रम) की ओर बढ़ रही है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल नेतृत्व में केरल की धरती पर सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश देती अहिंसा यात्रा जन-जन के मानस को सद्विचारों से भावित बना रही है। बुधवार को आचार्यश्री शंकरमंगलम, चावरा स्थित बेबी जाॅन मेमोरियल गवर्नमेंट काॅलेज परिसर से मंगल प्रस्थान किया। राजमार्ग पर गतिमान आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे-जैसे अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे सूर्य भी अपनी पूर्ण प्रखरता के साथ आसमान में चढ़ता जा रहा था। सूर्योदय के कुछ समय बाद से ही सूर्य की किरणें धरती को तप्त बना दीं। लोगों के शरीर पसीने से तर-बतर बन रहे थे। इस मौसम की प्रतिकूलता के बावजूद समताभावी आचार्यश्री के ज्योतिचरण निरंतर गतिमान रहे। लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री कोल्लम में पधारे। कोल्लम जिला मुख्यालय पर स्थित रमा वर्मा क्लब परिसर में आचार्यश्री का पावन पदार्पण हुआ।

इस परिसर में आयोजित प्रातः के मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आत्मा के लिए त्याग का बड़ा महत्त्व होता है। अच्छी प्रतिज्ञा, अच्छा संकल्प आत्मा के उत्थान में सहयोगी बनता है। जितना जीवन में त्याग बढ़ता है, उतना धर्म भी बढ़ता है। त्याग धर्म, भोग अधर्म, व्रत धर्म, अव्रत अधर्म। जितना-जितना त्याग होगा, आत्मोत्थान होगा, जीवन अच्छा बनेगा। आदमी के जीवन में छोटे-छोटे संकल्प भी हों तो उसे उसके जीवन का कल्याण करने वाले बन सकते हैं। एक अच्छा संकल्प भी आदमी के जीवन में परिवर्तन ला सकता है। त्यागमय जीवन आदमी को अच्छी दिशा में ले जाने वाले होते हैं और उनका कल्याण करने वाले होते हैं। त्याग से आदमी के जीवन में धर्म की प्रभावना भी हो जाती है। त्याग, नियम और संकल्पों से आदमी की आत्मा निर्मल बनती है। इसके साथ-साथ पुण्य का बंध होता है तो भौतिक लाभ भी प्राप्त हो सकता है। त्याग से निर्जरा होती है और उसके साथ पुण्य का बंध भी होता है जो आदमी को भौतिक लाभ भी प्रदान करने वाला हो सकता है। बड़े संकल्पों के पालन से आदमी बड़ा बन सकता है। आदमी को अपने जीवन में कोई न कोई त्याग अथवा संकल्प रखने का प्रयास करना चाहिए। चाहे वह खाने की सीमा का संकल्प हो, रात्रि भोजन त्याग का संकल्प हो, चोरी का त्याग हो, झूठ बोलने का त्याग हो तो आत्मा निर्मलता की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

मंगल प्रवचन के पश्चात् आचार्यश्री के आह्वान पर उपस्थित कोल्लमवासियों ने आचार्यश्री से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। श्री दलपतराजजी ने आचार्यश्री के स्वागत में कवितापाठ किया। श्री किरण शाह, श्री सूर्यकुमार शाह और क्लब के सेक्रेट्री श्री सेरी जैकब ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। प्रज्ञाचक्षु श्री रजनीकांत ने आचार्यश्री के स्वागत में गीत का संगान किया।

सान्ध्यकालीन विहार के दौरान आचार्यश्री लगभग चार किलोमीटर का विहार कर कोल्लम के ही जवाहर नगर स्थित बीशोप जेरोम इंस्टिट्यूट परिसर में पधारे। आचार्यश्री का रात्रिकालीन प्रवास इसी परिसर में हुआ।